दर्शन का पाश्चात्य सम्प्रत्यय

पाश्चात्य जगत में दर्शन का सर्वप्रथम विकास यूनान (ग्रीक) देश में हुआ। प्रारम्भ में तो वहाँ भी दर्शन का क्षेत्र बड़ा व्यापक था परन्तु जैसे जैसे ज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ। दर्शन एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में सीमित होता चला गया दर्शन के लिए अंग्रेजी में Philosophy शब्द प्रयोग होता है। जो दो ग्रीक शब्दों Philos+Sophia से मिलकर बना है। Philos का अर्थ है 'प्रेम' Sophia का अर्थ है - 'ज्ञान' अर्थात ज्ञान से प्रेम यह दर्शन का विस्तृत अर्थ यूनानी ग्रीक दार्शनिक प्लेटो - दर्शन को इसी अर्थ में स्वीकार करते थे। उनके शब्दों में वह व्यक्ति जो सभी प्रकार का ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा रखता है और सीखने के लिए सदैव इच्छुक रहता है। कभी भी संतोष करके रुकता नहीं है। वास्तव में वह रुकता नहीं दार्शनिक है।

Philosophy and Education दर्शन और शिक्षा

दर्शन तथा शिक्षा अलग-अलग व्याख्या करने से स्पष्ट हो जाता है। कि दोनों का लक्ष्य व्यक्ति को सत्य का ज्ञान करना तथा उसके जीवन को विकसित करना है। ऐसी दशा में यह कहना उचित ही होगा, कि दर्शन तथा शिक्षा का घनिष्ठ सम्बन्ध ही नहीं, अपितु दोनों एक दूसरे पर आश्रित भी है। जो निम्न है।

(1) दर्शन जीवन के उस वास्तविक लक्ष्य को निर्धारित करता है, जिसे शिक्षा को प्राप्त करना है।
(2) दर्शन शिक्षा के विभिन्न अंगों को प्रभावित करता है।

(3) शिक्षा दर्शनका क्रियात्मक साधन है।
(4) शिक्षा लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है।
(5) यदि दर्शन जीवन के लक्ष्य को निर्धारित करता है, तो शिक्षा उस लक्ष्य को प्राप्त करने का एक साधन है।

शिक्षा और दर्शन के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को देखते हुए यह कहा जा सकता है। कि दर्शन और शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू है। दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष है।

Scanned with CamScanner

दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है। और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष है। एक विचार को जन्म देता है। दूसरा उसे व्यवहारिक रुप प्रदान करता है।

शिक्षा के महत्व को खोजने का प्रयास दार्शनिको ने किया है। शिक्षा का उद्देश्य दर्शन के अभाव मे कभी पूर्णता और स्पष्टता को प्राप्त नहीं कर सकता। दर्शन व शिक्षा की परस्पर निर्भरता विद्वानो द्वारा की गयी जो निम्न है।

जेन्टाइल → "दर्शन शिक्षा बिना सही मार्ग पर आगे नही बढ सकती है।"

फिक्टे → "दर्शन की सहायता के बिना शिक्षा का उद्देश्य कभी पूर्ण रुप से सफल नही हो सकता है।"

रडमण्स ⇒ "शिक्षा दर्शन का गतिशील पहलू है यह दार्शनिक विश्वास का सक्रिय पक्ष है और जीवन के आदर्शो को प्राप्त करने का व्यवहारिक साधन है।"

रॉस ⇒ "शिक्षा व दर्शन एक ही पहलू के समान है दर्शन जीवन का विचारात्मक पक्ष है और शिक्षा क्रियात्मक पक्ष है।"

शिक्षा के दार्शनिक आधार म०वि०वि०- पृ०१२,१३

Scanned with CamScanner

Page No.
Date: / /

दर्शन की प्रमुख शाखाएँ
Main Branches of Philosophy

दर्शन की प्रमुख शाखाएँ तीन हैं।
(1) तत्व मीमांसा (Metaphysics)
(2) ज्ञान मीमांसा - (Epistemology)
(3) मूल्य मीमांसा - (Axiology)

(1) तत्व मीमांसा (Metaphysics)

दर्शन की प्रथम शाखा तत्व मीमांसा है। Metaphysics शब्द ग्रीक भाषा का शब्द है। Meta का अर्थ है "के परे" Physics का अर्थ है "भौतिक" इस प्रकार अर्थ हुआ "भौतिक से परे" या "भौतिक के पार"

अर्थात - वह जो भौतिक संसार से आगे है। दर्शन की इस शाखा के विविध विषय निम्न लिखित हैं -

A- आत्म तत्व सम्बन्धी ज्ञान → आत्मा क्या है? आत्मा व शरीर का सम्बन्ध क्या है? संकल्प स्वतन्त्र है अथवा परतन्त्र? इत्यादि प्रश्नो का उत्तर खोजने का प्रयत्न किया जाता है।

(B) ~~ज्ञानमीमां~~ · ईश्वर सम्बन्धी तत्व ज्ञान
यह वास्तविकता और सच्चाई को खोजने का प्रयास करता है। संसार में जो कुछ है वह नष्ट होगा इसलिए जो परम सत्य है नश्वर है की खोज करने में आध्यात्मि और धर्म सदैव लगे रहते हैं।

(1) तत्व मीमांसा (Metaphysics)

- आत्मा सम्बन्धी ज्ञान
- ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान
- सृष्टि सम्बन्धी ज्ञान
- ब्रह्माण्ड विज्ञान
- सत्ता विज्ञान

(2) ज्ञान मीमांसा (Epistomology)

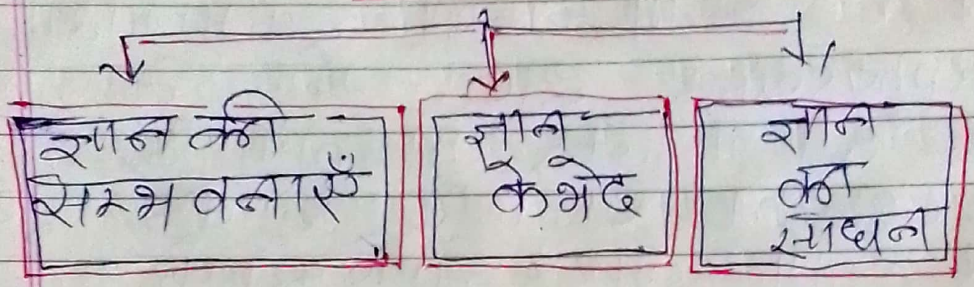

(3) मूल्य मीमांसा (Axiology)

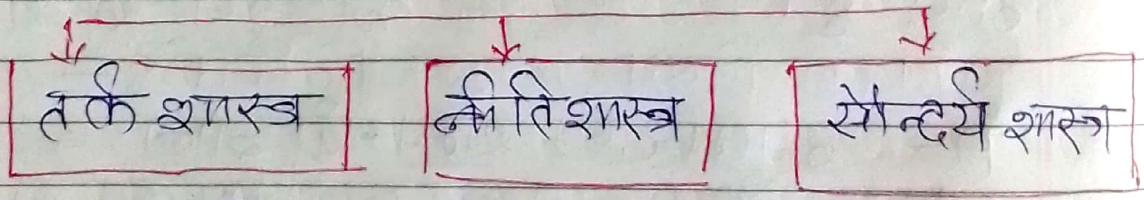

मूल्य मीमांसा को आचार मीमाँशा भी कहते है।

- इसमे मानव जीवन के अंतिम उद्देश्यो की विवेचना की जाती
- मानव के करणीय अकरणीय की विवेचना को ही नीति शास्त्र कहते है।

Scanned with CamScanner

दर्शन Philosophy

तत्व मीमांसा Metaphysics	ज्ञान मीमांसा Epistemology	मूल्य मीमांसा Axiology
(वास्तविकता की प्रकृति)	(ज्ञान का सिद्धान्त)	मूल्यों का सिद्धान्त
(1) आत्मा सम्बन्धी	ज्ञान का उद्भव	तर्कशास्त्र
(2) ईश्वर सम्बन्धी	ज्ञान का प्रकार	नीतिशास्त्र
(3) सृष्टि सम्बन्धी	ज्ञान प्रकृतिया	सौन्दर्यशास्त्र
(4) सत्ता सम्बन्धी	ज्ञान की वैधता	
(5) स्वयं सम्बन्धी	ज्ञान के स्रोत	
(6) युगान्त विज्ञान		

भारतीय चिन्तक अध्ययन क्षेत्र को तीन भागो मे
1 बाटते (1) तत्व मीमांसा (2) ज्ञान मीमांसा (3) मूल्यमीमांसा

(1) तत्व मीमांसा (Metaphysics)

किसी भी दर्शन की तत्व मीमांसा में इस ब्रह्माण्ड के वास्तविक स्वरुप एवं उसमे मानव जीवन की तात्विक विवेचना की जाती हैं एवं मनुष्य के जीवन की मूल आवश्यकता की विवेचना की जाती है और इन उद्देश्यों की प्राप्ति के साधन मार्गो की विवेचना की जाती है कोई भी मानव समाज मनुष्यों को इन उद्देश्यों की प्राप्ति के योग्य बनाने के लिए शिक्षा की व्यवस्था करता है। तब कहना ना होगा कि किसी भी ~~शिक्षा~~ समाज की शिक्षा के उद्देश्य मूल रूप से उसके जीवन दर्शन पर आधारित होते है। जहाँ तक शिक्षा की पाठ्यचर्या की बात की जाय तो उद्देश्यों की प्राप्ति का

का साधन होती है।

अतः स्पष्ट है कि इसका विकास भी तत्व मीमांसा के आधार पर किया जाता है।

उदाहरण के लिए प्रकृति वाद और आदर्श वाद भी तत्व मीमांसा को लीजिए। प्रकृति वाद के अनुसार यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रकृति जन्य है और प्रकृति द्वारा ही निर्मित यह भौतिक जगत ही सत्य है, इसके अतिरिक्त कोई आध्यात्मिक जगत नहीं है।

इसके अनुसार मनुष्य भी एक प्रकृति जन्य रचना है जिसके जीवन का उद्देश्य सुख पूर्वक जीना है। परिणामतः यह शिक्षा द्वारा सुख पूर्वक जीने पर बल देता है। और सुख पूर्वक जीने के लिए उसके शारीरिक एवं मानसिक विकास पर बल देता है। जिससे वह जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके।

इसके विपरित आदर्श वाद सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को किसी परोक्ष (आध्यात्मिक) शक्ति द्वारा निर्मित मानता है। इसके अनुसार भौतिक संसार नश्वर है

यह मानता है कि मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्म अनुभूति या ईश्वर की प्राप्ति करना। परिणामतः यह शिक्षा द्वारा मनुष्य को आध्यात्मिक आत्म अनुभूति करने योग्य बनाने पर बल देता है।

Scanned with CamScanner

ज्ञान एवं तर्क मीमांसा और शिक्षा

Epistemology and Ethics and Education

किसी भी दर्शन की ज्ञान एवं तर्क मीमांसा मे ज्ञान के वास्तविक स्वरूप और ज्ञान प्राप्त करने के साधनो एवं विधियो की व्याख्या की जाती है और ज्ञान की सत्यता को प्रमाणित करने की तर्क की विधियों की व्याख्या की जाती है सामान्यत: जिस समाज मे जो दर्शन व्याप्त होता है। उसमे शिक्षा सामग्री (पाठ्यचर्या) और शिक्षा प्राप्त करने के साधन एवं विधियाँ मूल रूप से उसी दर्शन की तर्क व ज्ञान मीमांसा के आधार पर विकसित किये जाते है।

उदाहरण के लिए प्रकृति वाद व आदर्श वाद की ही ज्ञान एवं तर्क मीमांसा को ही लीजिए। प्रकृति वाद के अनुसार यह वस्तु जगत ही सत्य है और इस वस्तुजगत का ज्ञान ही सत्य ज्ञान है और इस वस्तु जगत का ज्ञान मनुष्य अपनी कर्मेन्द्रियों द्वारा ही प्राप्त कर सकता है।

परिणामत: यह शिक्षा के क्षेत्र में कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियो द्वारा सीखने पर बल देता है। इसके विपरीत आदर्शवाद आध्यात्मिक जगत के ज्ञान को सत्य मानता है और इस आध्यात्मिक जगत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आत्मशक्ति एवं विवेक शक्ति को आवश्यक मानता है। यह वस्तु जगत के, इन्द्रियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को भी तर्क एवं विवेक की कसोटी पर कसकर स्वीकार करने पर बल देता है।

Scanned with CamScanner

मूल्य एवं आचार मीमांसा →

किसी भी दर्शन की मूल्य मीमांसा एवं उसकी आचार मीमांसा मूल रुप से उसके तत्व मीमांसा पर आधारित है। इसके अन्तर्गत मनुष्य के आदर्शो, मूल्यो तथा करणीय एवं अकरणीय कर्मो की व्याख्या की जाती है। कोई भी समाज मनुष्य को इन आदर्शो एवं मूल्यो का ज्ञान कराने और उन्हे करणीय कर्मो के सम्पादन मे प्रशिक्षित करने के लिए शिक्षा की व्यवस्था करता है तब कहना न होगा कि किसी भी समाज की शिक्षा के उद्देश्य, उसकी पाठ्यचर्या अनुशासन का स्वरुप एवं अनुशासन प्राप्त करने की विधियाँ, शिक्षक-शिक्षार्थियो के कर्त्तव्य एवं उसके आपसी सम्बन्ध दर्शन की मूल्य एवं आचार मीमांसा पर आधारित होती है।

उदाहरण →

प्रकृति वाद एवं आदर्शवाद की मूल्य एवं आचार मीमांसा को ही लीजिए। प्रकृतिवाद किन्हीं शाश्वत मूल्यों में विश्वास नही करता। इसके अनुसार मनुष्य की मूल प्रकृति स्वंय में निर्मल एवं शुद्ध होती है, समाज ही उसे विकृत करता है, शिक्षा द्वारा उसके अपने प्राकृतिक विकास में सहायता करनी चाहिए। प्रकृतिवाद के अनुसार मनुष्य की प्रकृति स्वतन्त्र रहने की है

अतः शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को किसी प्रकार के अनुशासन के बन्धन में नहीं रखना चाहिए, उन्हें अपनी प्रकृति के अनुसार विकास करने के स्वतन्त्र अवसर देने चाहिए इसके विपरित आदर्शवाद शाश्वत मूल्यों में विश्वास करता है।

इसके अनुसार मनुष्य पाशविक प्रवृत्तियों लेकर पैदा होता इसके लिए उसे सही मार्ग पर लाने के लिए उसपर नियन्त्रण रखना आवश्यक है। वह शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन का हामी है। यह प्रारम्भसे ही बच्चों को इन्द्रिय निग्रह और मूल्य का पालन करने की ओर प्रवृत्त करने पर बल देता है। इतना ही नहीं अपितु यह शिक्षकों से भी इन्द्रिय निग्रह एवं मूल्य पालन की अपेक्षा करता है। इसके अनुसार जब तक शिक्षक इन्द्रिय निग्रह और मूल्यों का पालन नहीं करते, शिक्षार्थी से इनकी अपेक्षा नहीं की जा सकती।

यह दोनों के लिए आचार संहिता निश्चित करता है।

Scanned with CamScanner